तैमूर और उसका दल

अर्कादी गैदार, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

अर्कादी गैदार

सोवियत बाल साहित्य के सबसे प्रिय लेखकों में से एक, अर्कादी गैदार का जीवन असाधारण था. वह स्वयं मानते थे कि ऐसा इसलिए था क्योंकि उनका जन्म एक उल्लेखनीय समय में हुआ था.

1917 में विशाल रूसी साम्राज्य के मज़दूरों और किसानों ने ज़ार, ज़मींदारों और पूँजीपतियों के शासन को उखाड़ फेंका और सत्ता अपने हाथों में ले ली.

रूस के पूर्व शासक और पूँजीवादी देशों के शासक वर्ग, निश्चित रूप से, एक नए समाजवादी समूह के उदय को देखकर खुश नहीं थे, जिसका नेतृत्व मेहनतकश जनता द्वारा स्वयं चुनी गई सरकार कर रही थी. अब एक शोषण-मुक्त राज्य जहाँ सभी समान थे.

पुरानी रूसी सेना की कुछ टुकड़ियों का नेतृत्व ज़ारवादी अधिकारियों ने नई सोवियत सरकार के विरुद्ध जंग छेड़ी. उन्हें 14 पूँजीवादी शक्तियों का समर्थन प्राप्त था. 1918 में सोवियत सरकार ने एक जन सेना, लाल सेना, का गठन किया, जो क्रांति के युद्ध का वीरतापूर्वक लड़ी.

अर्कादी गैदार उस समय 14 वर्ष के थे. वो स्वेच्छा से मोर्चे पर गए और लाल सेना के सिपाही बने. 15 वर्ष की आयु में उन्होंने एक कंपनी और 16 वर्ष की आयु में एक रेजिमेंट की कमान संभाली.

उन्होंने तब तक युद्ध लड़ा जब तक कि दुश्मन सेना पूरी तरह से पराजित नहीं हो गई और सभी दुश्मनों को उनके देश से खदेड़ नहीं दिया गया. वे सेना में सेवा जारी रखना चाहते थे, लेकिन 1923 में मस्तिष्काघात के कारण वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और उन्हें सेना छोड़नी पड़ी.

गैदार ने याद करते हुए कहा, "तभी मैंने लिखना शुरू किया, शायद इसलिए कि जब मैं सेना में था तब मैं बहुत छोटा था और मैं लड़कों-लड़कियों को उस समय के जीवन के बारे में बताना चाहता था, कि यह सब कैसे शुरू हुआ और बाद में क्या हुआ, क्योंकि मैंने बहुत कुछ देखा था."

अपने छोटे से जीवनकाल में—उनका देहांत 37 वर्ष की आयु में हुआ—गैदार बच्चों के बहुत अच्छे दोस्त बन गए और उन्होंने बच्चों लिए कई अच्छी किताबें लिखीं.

"तैमूर और उसका दल" 1940 के दशक के आरंभ में प्रकाशित हुई. यह वह दौर था जब दुनिया का पहला समाजवादी देश एक नया जीवन, निजी मालिकों से मुक्त एक नया शक्तिशाली उद्योग और ज़मींदारों से मुक्त एक नई सामूहिक कृषि प्रणाली का निर्माण कर रहा था, जिससे लोगों के बीच नए रिश्तों का आधार तैयार हो रहा था. सोवियत सरकार ने सभी को काम करने, आराम करने और शिक्षा का अधिकार दिया. बड़े-बड़े काम हो रहे थे. बच्चे भी हर उस चीज़ में हिस्सा लेना चाहते थे जो हो रही थीं. युवा पूरे उत्साह और संवेदनशीलता के साथ, बड़ों के प्रयासों में उनकी मदद करने को तैयार थे.

"तैमूर और उसका दल" का मुख्य पात्र पायनियर बाल संगठन (10 से 15 साल के बच्चों के लिए) का एक सदस्य है, जो उस ज़माने के सोवियत बच्चों के बेहतरीन गुणों का उदाहरण है. यह कहानी है कि कैसे बच्चों का खेल, एक महत्वपूर्ण उपक्रम बन जाता है और कैसे उस खेल उसमें शामिल होने वाले बच्चों को प्रभावित और बदलता है.

जब गैदार की किताब प्रकाशित हुई, तब तक फासीवादी जर्मनी ने रूस पर हमला नहीं किया था, लेकिन युद्ध के काले बादल पहले ही क्षितिज पर मँडरा रहे थे. "तैमूर और उसका दल" में लेखक उभरती पीढ़ी को आने वाली कठिन परीक्षाओं के लिए तैयार करने की कोशिश करता है.

1941 में महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध शुरू हुआ. तैमूर की तरह ही, हज़ारों लड़के-लड़कियों ने युद्ध के मैदानों में लड़ने वालों और युद्ध में मारे गए लोगों के परिवारों की मदद की. उन्होंने पीछे से मदद करके युद्ध में लड़ने वालों की मदद की.

इस तरह एक राष्ट्रव्यापी देशभक्तिपूर्ण बाल आंदोलन का उदय हुआ, जो तैमूर आंदोलन के नाम से जाना गया.

जब युद्ध शुरू हुआ, तो अर्कादी गैदार मोर्चे पर गए और युद्ध के शुरुआती दिनों में नाज़ियों के खिलाफ असमान लड़ाई में वीरतापूर्वक शहीद हो गए.

यह पुस्तक आपका "तैमूर और उसका दल" के मुख्य पात्रों से परिचित कराती है: एक साहसी लड़की झेन्या, उसकी छात्रा बहन ओल्गा, उनके पिता, लाल सेना के कर्नल अलेक्जेंद्रोव, दयालु और साहसी तैमूर और उसके दोस्त और दुश्मनों से.

कर्नल अलेक्जेंड्रोव सेना में सेवारत थे, और उनकी बेटियाँ उनके बिना मास्को के पास अपने गर्मियों वाले घर में जा रही थीं. उनकी बड़ी बेटी ओल्गा सामान लेकर ट्रक में सवार होकर चली गई, लेकिन उसकी छोटी बहन झेन्या फ्लैट की सफाई करने के लिए वहीं रुकी. बाद में वह अपने पिता को एक तार भेजने वाली थी और फिर ट्रेन से शहर जाने वाली थी.

झेन्या के पास मॉस्को स्टेशन से अपने पिता को तार भेजने का समय नहीं था, इसलिए वो ट्रेन से उतरते ही वह स्थानीय डाकघर ढूँढ़ने गई. वह एक पुराने पार्क से गुज़री और उसने खुद को एक सुनसान गली में पाया. उसे एहसास हुआ कि वह रास्ता भटक गई थी.

उसने बेतरतीब ढंग से एक गेट खोला और एक घर के बरामदे तक जाने वाले रास्ते पर चल पड़ी.

"क्या आप मुझे डाकघर का रास्ता बता सकते हैं?" झेन्या ने ऊँची लेकिन बहुत विनम्र आवाज़ में पुकारा. लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला.

उसने दरवाज़ा खोला और अंदर चली गई. वहां पर कोई नहीं था. वह जाने के लिए मुड़ी, लेकिन एक बड़े कुत्ते ने उसका रास्ता रोक दिया. कुत्ता मेज़ के नीचे से रेंगकर आया और उसका रास्ता रोकते हुए लेट गया.

"बेवकूफ़ी मत करो!" झेन्या बोली, "मैं कोई चोर नहीं हूँ! तुम चोरों और जासूसों का पीछा करो, लेकिन अच्छे लोगों को अकेला छोड़ दो! देखो, ये रही हमारे फ्लैट की चाबी, और ये पिताजी के लिए तार. वो लाल सेना के अफ़सर हैं, समझे?"

कुत्ता हिला तक नहीं. झेन्या ने खिड़की से बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन कुत्ता लेकिन ज़ोर से गुर्राते हुए अपने पैरों पर उछला. अब झेन्या के पास घर के मालिक के आने का इंतज़ार करने के अलावा और कोई चारा नहीं था.

झेन्या ने सोफ़े के सख़्त हत्थे पर अपना सिर टिकाया. वो थोड़ा रोई और फिर धीरे से सो गई.

जब वह उठी तो सुबह हो चुकी थी. उसका सिर अब तकिये पर टिका हुआ था और उसके पैरों पर एक कंबल था. कुत्ता जा चुका था. रात में वहां कोई जरूर आया होगा! मेज़ पर एक नोट पड़ा था.

उसमें लिखा था: "जाते समय दरवाज़ा अच्छी तरह बंद कर देना - तैमूर. तैमूर! तैमूर कौन था? झेन्या को उसे ढूँढ़कर उसका शुक्रिया अदा करना होगा. उसने अगले कमरे में देखा. वहाँ कोई नहीं था. उसने कुत्ते की भयानक गुर्राहट सुनी और फिर वो घर से बाहर गली में भागी. वो अपनी चाबी और तार मेज़ पर ही भूल गई.

आखिरकार, झेन्या को अपना घर मिल गया और वह धीरे-धीरे बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ी.

"हेलो ओल्गा," उसने बहादुरी भरी मुस्कान के साथ कहा. "तुम्हें अंदाज़ा नहीं होगा कि रात मेरे साथ कितना अजीब हादसा हुआ! मैंने फ्लैट की चाबी खो दी और मैंने पापा को तार भी नहीं भेजा."

तभी दरवाज़ा खुला और एक बकरी अंदर घुस आई, उसके पीछे एक लड़की चिल्ला रही थी.

उस अप्रिय बातचीत को टालने के लिए झेन्या बकरी को भगाने के लिए बगीचे में दौड़ी.

"यह रही चाबी और यह लो रसीद. तुम्हारा तार पहले ही भेजा जा चुका है," लड़की ने धीमी आवाज़ में कहा, और झेन्या के हाथ में एक कागज़ थमा दिया जिस पर लिखा था: "चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है. सब ठीक है, और मैं यह बात किसी और को नहीं बताऊँगा. तैमूर."

झेन्या ने नोट अपनी जेब में रख लिया और अपनी हैरान बहन के पास वापस चली गई. "मैं तो बस मज़ाक कर रही थी. ओल्गा, देखो मैंने फ्लैट साफ़ किया और फर्श भी साफ़ किया. ये रही चाबी और तार की रसीद. और अब मैं तुम्हें एक पुच्ची दूँगी."

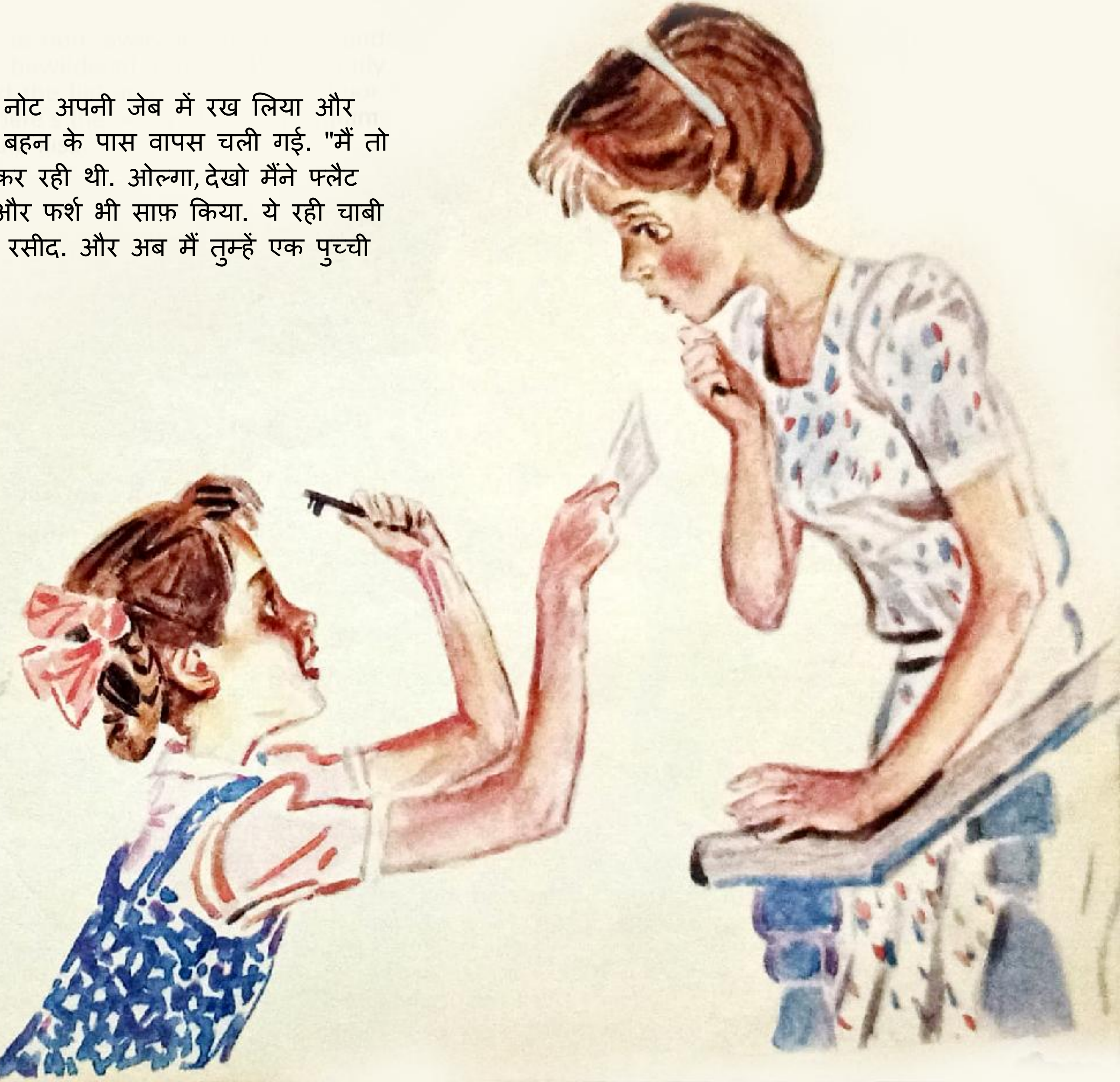

अलेक्जेंड्रोव की झोपड़ी के पीछे पेड़ों के बीच एक पुराना शेड छिपा हुआ था. उससे थोड़ी ही दूर खड़ी झेन्या ने अपनी जेब से एक गुलेल निकाली और एक छोटे से कार्डबोर्ड पैराशूटिस्ट को हवा में उड़ाया.

लगभग तुरंत ही हवा के एक झोंके ने पैराशूटिस्ट को शेड की खिड़की के ऊपर फेंक दिया. शेड की छत से चारों तरफ़ तार खिंचे हुए थे.

"बाप रे! मुझे जाकर उस छोटे आदमी को बचाना होगा!"

झेन्या ने शेड के पास एक पुरानी जर्जर सीढ़ी लगाई. फिर वो खिड़की तक चढ़ी और अटारी के फ़र्श पर कूद गई.

"यह बहुत अजीब है! ऐसा लगता है जैसे यहाँ कोई रहता है. क्यों? यहाँ पर एक टेलीफ़ोन है... और एक जहाज़ का स्टीयरिंग व्हील भी."

उसे एक बड़े जहाज़ की याद आई. खैर, कोई बात नहीं! वह कप्तान होगी. "हार्ड अपोर्ट!" वो ऊँची आवाज़ में चिल्लाई और फिर उसने स्टीयरिंग व्हील घुमाया. अचानक टेलीफ़ोन की घंटी बजी. तो, वो कोई खिलौना टेलीफ़ोन नहीं था. उसे बेचैनी हुई. उसने रिसीवर उठाया और एक तेज़ आवाज़ सुनी, "हलो! हलो! कौन है? कौन बेवक़ूफ़ तार तोड़ रहा है और बेमतलब सिग्नल भेज रहा है?"

"यह कोई बेवकूफ़ नहीं है," झेन्या ने कहा, "मैं झेन्या हूँ."

"अरे पागल! स्टीयरिंग छोड़ और अपनी जान बचाकर भाग! वो किसी भी पल आ सकते हैं और तुझे पकड़ सकते हैं."

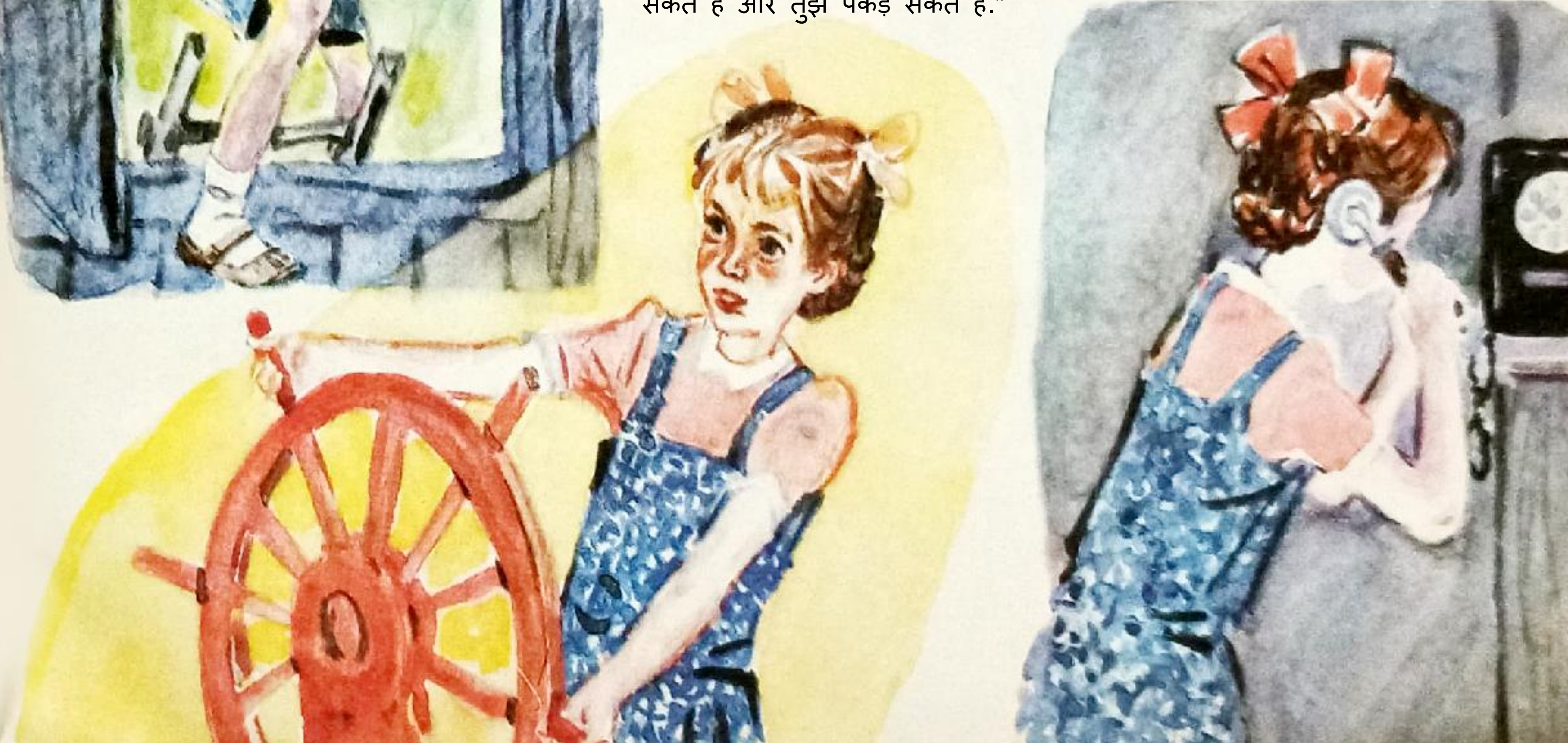

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. अटारी तेज़ी से लड़कों से भर रही थी.

"तुम कौन हो?" झेन्या ने कहा, "चले जाओ," यह हमारा बगीचा है. मैंने तुम्हें आने के लिए नहीं कहा था."

उसी पल खिड़की पर एक और साया छा गया. लड़के हट गए और झेन्या ने खुद को एक नए लड़के के सामने पाया. "शांत हो जाओ, झेन्या! कोई तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा. हम एक-दूसरे को जानते हैं. मैं तैमूर हूँ."

"तैमूर?! तो क्या तुमने कल रात मुझे कंबल से ढंका था? तुमने एक नोट मेज़ पर छोड़ा और पापा को तार भेज दिया? लेकिन क्यों?"

"बैठो और मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें सबकुछ समझा दूँगा."

एक गुप्त संगठन के मुख्यालय में सदस्यों की एक बैठक शुरू हुई. तैमूर ने गाँव का एक नक्शा फैलाया: "कल भोर होते ही, जब सब सो रहे होंगे, तब कोल्या कोलोकोलचिकोव और मैं झेन्या द्वारा तोड़े गए तारों की मरम्मत करेंगे."

"अज्ञात लड़कों ने 34 नंबर के बाग में एक पेड़ से सेब तोड़े हैं और उसकी कुछ शाखाएँ भी. वहां क्रुकोव रहता है, जो लाल सेना में सैनिक है," कोल्या ने बताया.

"यह क्वाकिन और उसके डिप्टी, फिगी का काम है," एक लड़के ने कहा. "ठीक है! हम क्वाकिन से अलग से निपटेंगे. आगे और क्या?"

"25 नंबर की बूढ़ी डेयरीवाली के बेटे को, घुड़सवार सेना में बुला लिया गया है."

"यह तो पुरानी खबर है," तैमूर ने फटकार लगाते हुए कहा. "हमने उसके गेट पर दो दिन पहले ही अपना लाल निशान लगाया था."

सिमा सिमाकोव उछल पड़ीं. पुश कार्स्कोया स्ट्रीट में एक बकरी खो गई है. 54 नंबर पर, जहाँ गुरयेव रहता है. वो अब सेना में है और बुढ़िया वहाँ पर लड़की, न्युरका, पर अपना गुस्सा उतार रही है."

"बकरी ढूँढ़ो," तैमूर ने आदेश दिया. "चार लोगों की एक टुकड़ी लेकर जाओ."

मीटिंग खत्म हो गई. लड़के बिना कोई आवाज़ किए चारों तरफ़ गायब हो गए. तैमूर और झेन्या गली में निकल आए.

"क्या अब तुम्हें सब कुछ साफ़ हुआ?" "बिल्कुल नहीं..."

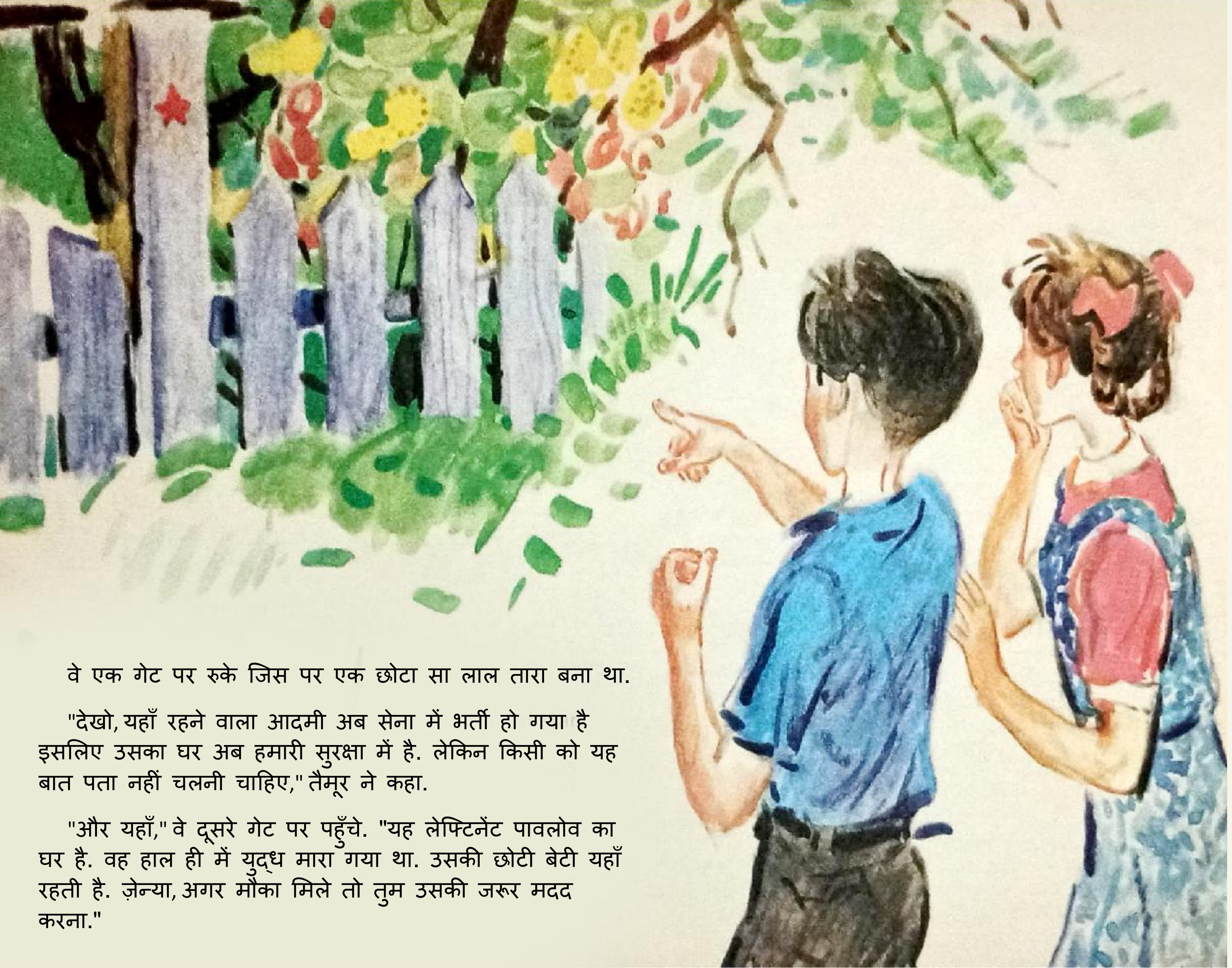

वे एक गेट पर रुके जिस पर एक छोटा सा लाल तारा बना था.

"देखो, यहाँ रहने वाला आदमी अब सेना में भर्ती हो गया है इसलिए उसका घर अब हमारी सुरक्षा में है. लेकिन किसी को यह बात पता नहीं चलनी चाहिए," तैमूर ने कहा.

"और यहाँ," वे दूसरे गेट पर पहुँचे. "यह लेफ्टिनेंट पावलोव का घर है. वह हाल ही में युद्ध मारा गया था. उसकी छोटी बेटी यहाँ रहती है. ज़ेन्या, अगर मौका मिले तो तुम उसकी जरूर मदद करना."

उस शाम जब ओल्गा पड़ोस की एक डेयरी से दूध खरीद रही थी, तो उसने गली में दो लड़कों को बात करते देखा. उसने उनमें से एक को पहचान लिया, वह बदमाश क्वाकिन था. "क्वाकिन किससे बात कर रहा है?" उसने दूध वाली औरत से पूछा. "मुझे नहीं पता, शायद वह आवारा गुंडों में से एक है. वह तुम्हारे घर के आसपास घूमता रहता है." इससे ओल्गा चिंतित हो गई.

लेकिन दोनों लड़के दोस्ताना अंदाज़ में बात नहीं कर रहे थे.

"देखो, तुमने 34 नंबर पर लाल तारा देखा?" तैमूर कह रहा था.

"तो क्या हुआ?" "देखो मेरी सलाह मानो, बड़े सरदार, और जब भी तुम कहीं भी वो लाल तारा देखो, दिन हो या रात, वहां से अपनी जान बचाकर भाग जाओ! यह बात तुम अपने पूरे गिरोह को भी बताओ."

गाँव में अजीबोगरीब घटनाएँ हो रही थीं. जिस बुढ़िया की पोती की बकरी खो गई थी, उसे लकड़ियों का एक एक बड़ा ढेर दिया गया था, जो किसी ने ज़मीन पर नीचे पटक दिया था. बुढ़िया लकड़ियों को जमाते हुए कराह उठी और हाँफने लगी. यह उसके लिए बहुत कठिन काम था. फिर उसने हार मान ली और लंगड़ाते हुए अपने सब्ज़ी के खेत की ओर चली गई.

कुछ ही देर बाद लड़कों का एक झुंड आँगन में दौड़ा हुआ आया और वो जल्दी-जल्दी लकड़ियाँ जमाने लगा. लड़कों ने कोई आवाज़ कोई शोर नहीं किया.

बुढ़िया जब वापस आई तो उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ, वहाँ लकड़ियां का एक बड़े ढेर में बड़े कारीने से तरह सजी थीं ...

बकरी अकेली दौड़ती हुई घर वापस आई. उसके सींगों पर एक नोटिस चिपका था जिस पर लिखा था:

"मेरे सींग नुकीले हैं. सावधान!

अगर न्युरका को ताकत मिले तो!"

उस बूढ़ी डेयरीवाली औरत जिसका बेटा सेना में भर्ती हो गया था उसके घर के आँगन में पानी की टंकी, रोज़ाना पानी से भर जाती थी.

लेकिन सेब के बागों पर रात के हमले जारी रहे. तैमूर और उसके दोस्तों ने क्वाकिन को चेतावनी देने का फैसला किया.

कोल्या कोलोकोल्चिकोव और गीका उस पुरानी झोपड़ी की ओर चल पड़े जो क्वाकिन के गिरोह का ठिकाना था.

"यह लो!" गीका ने क्वाकिन को एक लिफ़ाफ़े में अल्टीमेटम दिया.

"इस पर विचार करने के लिए तुम्हारे पास चौबीस घंटे हैं. मैं कल इसी समय तुम्हारा जवाब लेने आऊँगा."

हैरान होकर, क्वाकिन ने लिफ़ाफ़ा फाड़ा और ज़ोर से पढ़ा: "दूसरों के बाग़ों में चोरी करने वाले गिरोह के बड़े सरदार मिखाइल क्वाकिन के लिए,' वह मैं ही हूँ," उसने खुद से कहा. "और उसके डिप्टी, जिसे फ़िगी के नाम से जाना जाता है..."वह तुम हो," उसने फ़िगी की ओर सिर हिलाया.

"'.. और इसी तरह उसके कुख्यात गिरोह के सभी सदस्यों के लिए— एक अल्टीमेटम,'" क्वाकिन ने आगे कहा.

"'इस तथ्य को देखते हुए कि तुम बाग़ों पर रात में चोरी कर रहे हो, और तुम हमारे लाल तारे के चिन्ह वाले घरों को भी नहीं छोड़ रहे हो— इसलिए हम तुम्हें नियत स्थान पर उपस्थित रहने का आदेश देते हैं. अगर तुम इनकार करोगे तो हम आगे की कार्रवाई करने के लिए खुद को स्वतंत्र समझेंगे."

"अल्टीमेटम का क्या मतलब है?" क्वाकिन ने पूछा. "यह एक अंतरराष्ट्रीय शब्द है. इसका मतलब है कि वे हमें पीटेंगे," एक छोटे बालों वाले लड़के, एलोश्का ने कहा.

"हमें कल उन दूतों को पकड़ना होगा और तैमूर और उसके साथियों को अच्छी तरह से पीटना होगा," फिगी ने धमकी देते हुए कहा. उन्होंने बात यहीं खत्म कर दी.

अगली सुबह ग्यारह बजे गीका और कोल्या पुरानी झोपड़ी में फिर से प्रकट हुए.

"हमें हमारे पत्र का उत्तर दो," गीका ने दृढ़ता से माँग की. "यह लो," क्वाकिन ने उसे एक मुड़ा हुआ कागज़ देते हुए कहा. गीका ने उसे खोला और उसमें एक भद्दा सा चित्र देखा जिसमें अंगूठे से नाक तक का एक चित्र था.

गीका ने शांति से कागज़ को दो टुकड़ों में फाड़ दिया; उसके चेहरे की एक भी मांसपेशी नहीं हिली. उसी क्षण दोनों लड़कों को क्वाकिन ने अपनी बाहों में जकड़ लिया.

"इस अल्टीमेटम के लिए तुम्हारी अच्छी पिटाई होनी ही चाहिए, लेकिन हम अच्छे लोग हैं. हम तुम्हें रात होने तक यहीं बंद रखेंगे और आज रात हम 24 नंबर वाले बाग़ के सेबों को, पूरी तरह खाली कर देंगे."

"तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे," गीका ने शांति से जवाब दिया. "हाँ, हम करेंगे!" फ़िगी चिल्लाया और उसने गीका के मुँह पर एक तमाचा मारा.

बंदियों को एक छोटी सी कोठरीनुमा इमारत में धकेल दिया गया और दरवाज़ा बाहर से बंद कर दिया गया.

"अच्छा," फ़िगी चिल्लाया, "अब सब कैसा लग रहा है, तुम्हारे हिसाब से या हमारे हिसाब से?" अंदर से एक खोखली आवाज़ आई; "अब से चीज़ें कभी तुम्हारे हिसाब से नहीं चलेंगी!"

"तुमने उसे तब मारा जब वह पलटकर तुम्हें मार नहीं सकता था," एलोश्का ने फ़िगी से कहा. "क्या वो सही था?"

"फिर मैं तुम्हें भी एक मुक्का मारूँगा!" फ़िगी ने गुर्राते हुए उसे मारा.

किसी ने नीबू के पेड़ की घनी पत्तियों में सिमा सिमाकोव का चेहरा नहीं देखा. सिमा ज़मीन पर गिरा और वहाँ भाग गया जहाँ उसके दोस्त उसका इंतज़ार कर रहे थे.

तैमूर का दस्ता चुपचाप इमारत तक पहुँचा. उन्होंने गीका और कोल्या को आज़ाद किया और उनकी जगह फ़िगी को उस कोठरी में बंद कर दिया.

तैमूर ने दरवाज़ा बंद किया और उस पर एक लिखा हुआ नोट टाँगा: "क्वाकिन, उन पर पहरा देने की कोई ज़रूरत नहीं. मैंने उन्हें बंद कर दिया है और चाबी ले ली है. मैं शाम होते ही सीधे बाग़ में आऊँगा."

फिगी ने बंद दरवाज़े पर बेतहाशा ज़ोर-ज़ोर से मुक्के मारे. जल्द ही क्वाकिन प्रकट हुआ, उसने नोट पढ़ा और मुस्कुराया, "घूँसे मारो, गीका! शाम से पहले ही तुम उससे तंग आ जाओगे!"

लड़कों का एक झुंड नंबर 24 की बाड़ के पास रेंगता हुआ आया. "फिगी को छोड़कर बाकी सब यहाँ हैं." क्वाकिन ने धीमी आवाज़ में कहा, "वह बहुत चालाक है," किसी ने टिप्पणी की, "मुझे यकीन है कि वह पहले ही बाग़ में पहुँच चुका होगा. वह हमेशा सबसे पहले ही घुस जाता है."

एल्योश्का को निगरानी के लिए सड़क पर छोड़कर, क्वाकिन का गिरोह बाड़ फांदकर चढ़ गया.

कुछ मिनट बाद संतरी ने महसूस किया कि किसी मज़बूत हाथ ने उसके हाथ और पैर जकड़ लिए हैं. वह ज़ोरदार सीटी बजाने में कामयाब रहा, लेकिन तुरंत ही किसी ने उसका मुँह बंद कर दिया.

"क्वाकिन! देखो टॉर्च की रोशनी! वे आ रहे हैं!"

"लड़ो, भागो मत!" क्वाकिन चिल्लाया और उसने टॉर्च पर सेब फेंके. "उनके हाथों से टॉर्च गिरा दो! ये तैमूर और उसकी पूरी सेना है! बाड़ के उस पार, जल्दी करो!" लेकिन गीका और कुछ दूसरे लड़के गली में उनका इंतज़ार कर रहे थे.

"कैदियों को मत मारो! गीका, उन्हें ले जाओ," अंधेरे से तैमूर की आवाज़ आई.

कैदियों को बाज़ार के चौराहे के किनारे एक खाली बूथ में ले जाया गया. उन्हें एक-एक करके अंदर धकेला गया और बंद कर दिया गया. "क्वाकिन को यहाँ मेरे पास लाओ," तैमूर ने आदेश दिया. "भागो," तैमूर ने क्वाकिन से कहा. "तुम बस एक मज़ाक हो. कोई भी तुमसे नहीं डरता है और किसी को तुम्हारी ज़रूरत भी नहीं है. यह चाबी लो और जाओ अपने दोस्त फ़िगी को बाहर निकालो."

"लड़कों को बाहर निकालो या फिर मुझे भी उनके साथ अंदर करो," क्वाकिन गुर्राया.

"नहीं," तैमूर ने कहा. "तुम्हारा काम अब तमाम हो गया और उनका भी."

लड़के चले गए. बूथ से ज़ोरदार धमाका और चीख-पुकार मच गई. आस-पास के घरों की खिड़कियों में बत्तियाँ जल उठीं. भीड़ जमा हो गई. किसी ने बूथ के ऊपर की बत्ती जलाई और लोगों ने यह नोटिस देखा: "राहगीरों, इन पर दया मत करो! यह जो लोग अंदर हैं, वे रात में हमारे बागों में घुसकर सेब चुराते हैं. इस नोटिस के पीछे ताले की चाबी है. जो भी कैदियों को रिहा करे, उसे सलाह दी जाती है कि वह सबसे पहले यह सुनिश्चित करे कि उनमें उसका कोई रिश्तेदार या दोस्त तो नहीं है."

अगले दिन पूरे मोहल्ले में गुंडों के पकड़े जाने की चर्चा हो रही थी. ओल्गा पार्क में झेन्या के साथ टहल रहे तैमूर से मिली और सीधे उसके पास गई.

"देखो, तुम ही बागों में घुसकर टहनियाँ तोड़ते हो. कुत्ते भी तुमसे दूर भागते हैं. तुम भले ही यंग पायनियर की टाई पहनते हो, लेकिन तुम सच में बदमाश हो!"

तैमूर का चेहरा पीला पड़ गया. "यह सच नहीं है," उसने कहा. "तुम्हें कुछ भी नहीं पता." लेकिन ओल्गा ने उसकी एक न सुनी. उसने झेन्या को तैमूर के पास जाने से भी मना किया.

झेन्या को सज़ा देने के लिए, उस शाम ओल्गा, बिना एक शब्द कहे मास्को चली गई.

ओल्गा के जाने के तुरंत बाद, लेफ्टिनेंट पावलोव की विधवा अपनी छोटी बेटी को गोद में लिए हुए अलेक्सांद्रोव की झोपड़ी के दरवाज़े पर आई. झेन्या उसे जानती थी, क्योंकि वह अक्सर उस लड़की से मिलने जाती थी और उसके साथ खेलती थी. उस महिला को तुरंत मास्को जाना था, इसलिए उसने झेन्या से रात भर अपनी बेटी की देखभाल करने को कहा.

झेन्या ने लड़की को सुला दिया और फिर वो वॉलीबॉल खेलने चली गई.

वह देर से लौटी और कुछ देर बाद उसने खिड़की पर दो टेलीग्राम चिपके देखे. एक ओल्गा का था और दूसरा उसके पिता का. दोनों में लिखा था कि कर्नल आधी रात से सुबह 3 बजे तक मास्को में रहेंगे.

झेन्या ने घबराकर घड़ी देखी: बारह बजने में कुछ मिनट कम थे. उसे किसी भी कीमत पर मास्को जाना था. लेकिन वह छोटी बच्ची को घर में अकेला कैसे छोड़ सकती थी?

मिनट धीरे-धीरे बीतते गए. उसने मास्को जाने वाली आखिरी ट्रेन की सीटी सुनी.

नहीं! उसकी पीड़ा असहनीय थी! उसे जाना ही होगा! शेड में लगे टेलीफोन तक!

ऊपर अटारी में झेन्या ने अपनी टॉर्च जलाई, जहाज़ के पतवार के पास गई, अपनी ज़रूरत की डोरी ढूँढ़ी और उसे एक हुक में फँसाकर, पहिया तेज़ी से घुमाया...

तैमूर सो रहा था. उसके कुत्ते ने उसे अपने पंजे से छुआ और फिर उसने अपने दाँतों से कंबल खींचा. "क्या बात है, रीता?" तैमूर ने आधी नींद में पूछा और फिर अचानक घंटी बजने की आवाज़ सुनी. "हाँ, झेन्या, मैं हूँ, तैमूर? रोओ मत! मैं अभी आ रहा हूँ!"

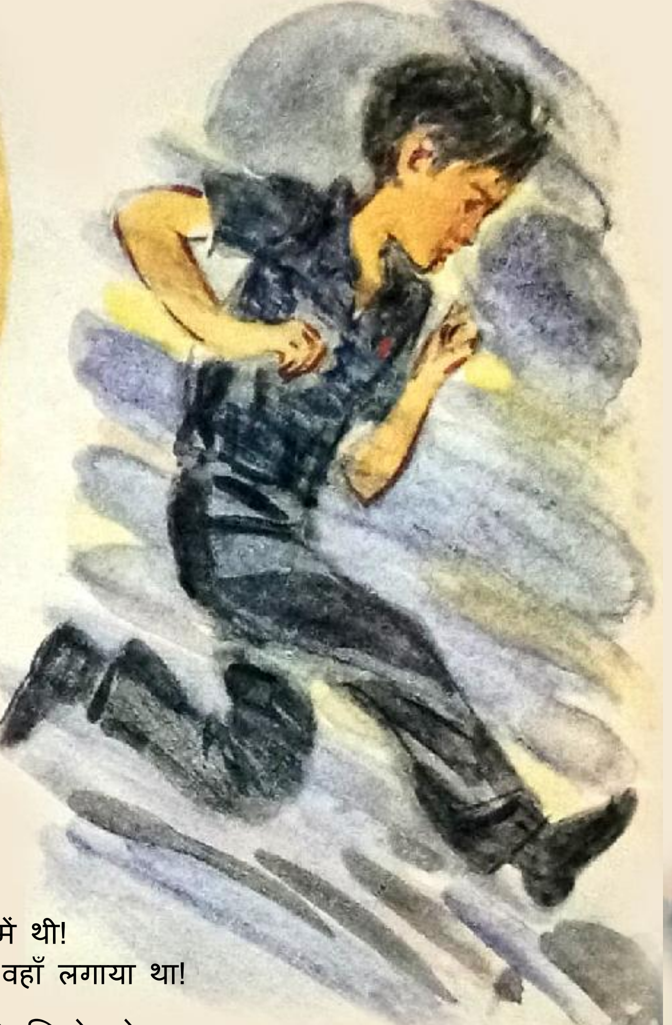

वह क्या मदद कर सकता था? एक लाल सेना अधिकारी की बेटी मुसीबत में थी! झेन्या के घर के गेट पर लाल तारे का निशान चिपका था. तैमूर ने उसे खुद वहाँ लगाया था!

तैमूर ने जल्दी से कपड़े पहने और कुछ मिनट बाद वो बूढ़े डॉक्टर कोलोकोलचिकोव के घर के दरवाज़े पर था. डॉक्टर उस समय तैमूर को देखकर हैरान हुए. "तुम किससे मिलना चाहते हो?" उन्होंने पूछा, "आप ही से. मैं आप से कुछ बात करना चाहता हूँ," तैमूर ने कहा.

वे ज़्यादा देर तक बात नहीं कर पाए. "हम यही करते हैं और इसी तरह खेलते हैं, लेकिन अब मुझे आपका कोल्या चाहिए," तैमूर ने समझाते हुए कहा.

बूढ़ा आदमी बिना कुछ कहे उठा. वो उस कमरे में गया जहाँ कोल्या सो रहा था और उसने लड़के के कंधे को खींचा, "उठो, उठो! तुम्हारा दोस्त तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है!"

तैमूर ने कोल्या को झेन्या के घर भेजा और वो खुद अपने घर भागा. वहाँ उसे एक कुल्हाड़ी मिली, वह बगीचे में गया और बंद गैराज के पास जाकर रुका. वहाँ कोई नहीं था जिससे वह अपनी इच्छा पूरी करने की इजाज़त मांग सके: उसके चाचा, जिनके यहाँ वह अब रुका हुआ था, रात बिताने के लिए मास्को गए हुए थे. तैमूर जानता था कि गैराज खोलना उसके लिए ठीक नहीं था, लेकिन उसके पास कोई चारा नहीं था. उसने कुल्हाड़ी से ताला तोड़ा और फिर मोटरसाइकिल बाहर निकाली.

कुछ ही पल बाद वह झेन्या के घर में था. "कोल्या, तुम यहीं रहो और छोटी बच्ची का ध्यान रखो. झेन्या, पीछे बैठ जाओ, हम मास्को जा रहे हैं."

कर्नल अलेक्सांद्रोव की छोटी छुट्टी खत्म होने वाली थी. उन्होंने उदास होकर अपनी घड़ी देखी. झेन्या नहीं आई थी...

तभी सामने का दरवाज़ा ज़ोर से खुला. झेन्या कमरे में घुसी और अपने पिता की ओर दौड़ी.

"शाबाश, झेन्या! अच्छी बच्ची!" कर्नल ने अभिभूत होकर कहा.

ओल्गा ने उससे सवालों की बौछार कर दी: "तुम कहाँ थीं? तुम पूरी तरह कीचड़ में लिपटी हुई हो, तुम्हारा चेहरा काला पड़ गया है! तुम यहाँ कैसे पहुँचीं?"

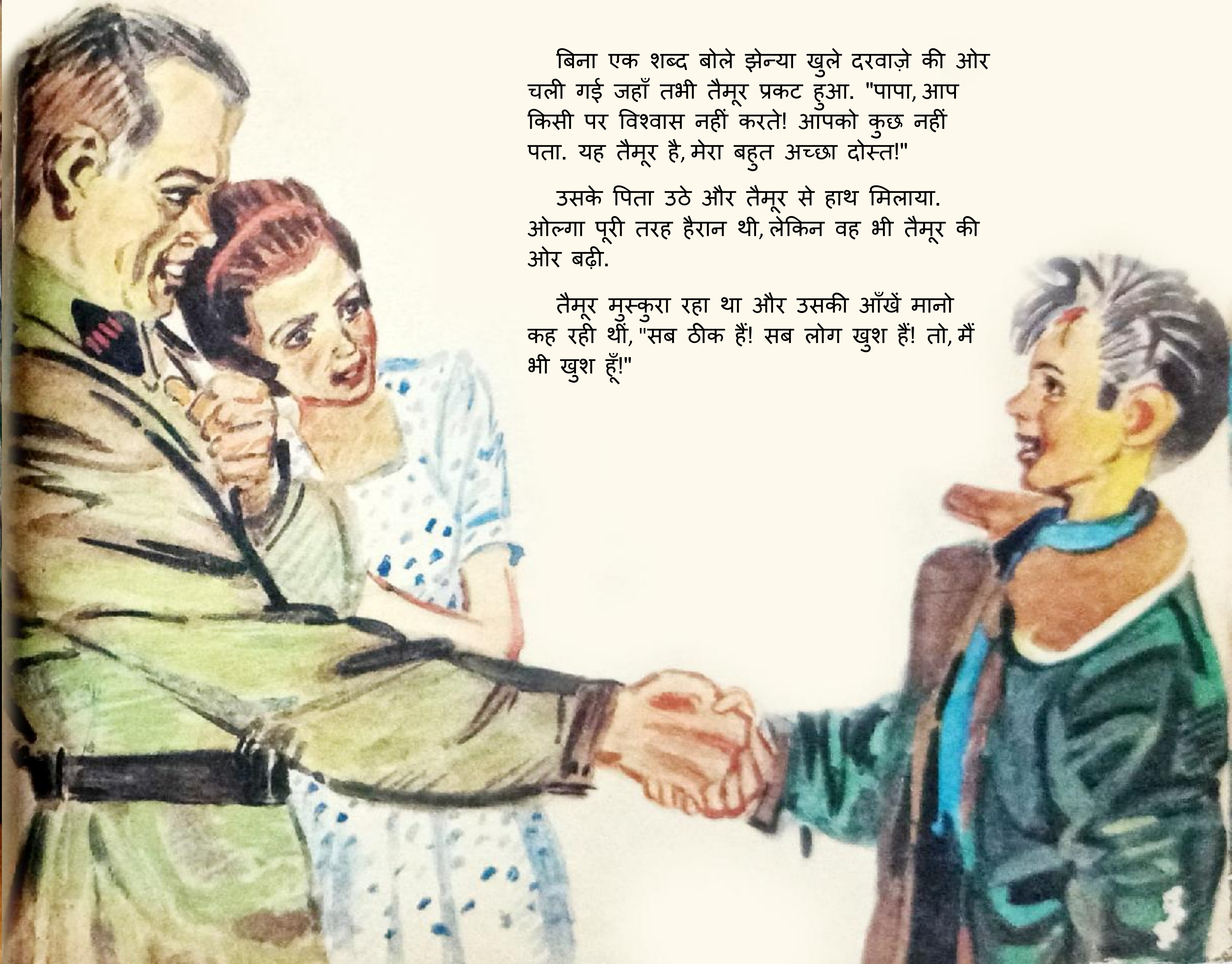

बिना एक शब्द बोले झेन्या खुले दरवाज़े की ओर चली गई जहाँ तभी तैमूर प्रकट हुआ. "पापा, आप किसी पर विश्वास नहीं करते! आपको कुछ नहीं पता. यह तैमूर है, मेरा बहुत अच्छा दोस्त!"

उसके पिता उठे और तैमूर से हाथ मिलाया. ओल्गा पूरी तरह हैरान थी, लेकिन वह भी तैमूर की ओर बढ़ी.

तैमूर मुस्कुरा रहा था और उसकी आँखें मानो कह रही थीं, "सब ठीक हैं! सब लोग खुश हैं! तो, मैं भी खुश हूँ!"

युद्ध समाप्त हुए और सोवियत धरती पर शांति आए 40 साल से ज़्यादा हो गए हैं. सोवियत संघ एक ऐसा देश है जो पूरी मानव जाति के लिए शांति चाहता है. वह सभी लोगों को स्वतंत्र, समान, स्वस्थ और खुश देखना चाहता है. वह चाहता है कि सभी बच्चे पढ़ें और सभी बड़ों के पास नौकरी हो.

अपने माता-पिता के साथ, सोवियत बच्चे इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करते रहे हैं.

तैमूर का आंदोलन फैल रहा है. इसके सदस्य युद्ध के सीनियर और वृद्धों की मदद करते हैं. वे बच्चों के लिए खेल के मैदान बनाते हैं और संगीत कार्यक्रम आयोजित करते हैं. वे बच्चों की टीमें गठित करके खेतों में किसानों की मदद करते हैं और जड़ी-बूटियाँ इकट्ठी करते हैं और फिर अपनी सारी कमाई शांति कोष में दान कर देते हैं.